International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 06-07-2022, Accepted: 26-07-2022, Published: 10-08-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 64-68

प्रकाश मनु व समकालीन बाल साहित्यकारों का साहित्यिक अवदानः एक विवेचना

पूजा रानी
शोधार्थी, (हिंदी), पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, भारत

सारांश
बाल साहित्य लेखन में प्रकाश मनु जी का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। अपनी लेखनी से प्रकाश मनु ने बाल मन के सभी स्वरूपों को कागज पर उकेरा है। यह शोध कार्य प्रकाश मनु के साथ साथ अन्य समकालीन बाल साहित्यकारों की रचनाओं का एक विवेचनात्मक अध्ययन है।

मूल शब्दः बाल साहित्यकार, बालकाव्य–संग्रह, बाल–काव्य विकास।

प्रस्तावना
परम्परागत लीक छोड़कर चलने वाले अलबेले बाल साहित्यकार प्रकाश मनु का जन्म 12 मई 1950 को शिकोहाबाद शहर में हुआ। यह उत्तरप्रदेश के फिरोजाबाद जिले में है। प्रकाश मनु जी की माता का नाम श्रीमती भागसुधी और पिता का नाम श्री चाननदास विग था। प्रकाश मनु जी का नौ भाई–बहनों का बड़ा परिवार था। सात भाई और दो बहनें। वे आठवें नंबर पर थे। प्रकाश मनु ने पहली से पांचवीं तक पढ़ाई शिकोहाबाद के पालीवाल विद्यालय में की। उसके बाद छठी से बारहवीं तक पालीवाल इंटर कालेज में पढ़े। सन् 1966 में उन्होंने पालीवाल इंटर कालेज, शिकोहाबाद से प्रथम श्रेणी में हाईस्कूल की परीक्षा पास की। गणित और अंग्रेजी में उनकी विशेष योग्यता थी। सन 1968 में इसी कॉलेज से इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उन्होंने शिकोहाबाद से हिन्दी में एम.ए. किया और फिर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र से 'छायावाद एवं परवर्ती काव्य में सौंदर्यानुभूति' विषय पर पीएच.–डी. की।

लेखन की शुरुआत
प्रकाश मनु के अनुसार, कक्षा 6–7 से ही उन्होंने थोड़ी–बहुत तुकबंदी शुरू कर दी थी। उन दिनों वे बहुत कविताएँ पढ़ते थे। उन्होनें खुद को भी कुछ लिखने को प्रेरित किया। सन् 1962 में चीन के आक्रमण के समय और बाद में भी देशभक्ति की बहुत कविताएँ लिखी गईं। पहली बाल कविता 'कितना सुंदर अपना देश' सन् 1975 में 'चंपक' में छपी थी। इसके बाद तो तेजी से लिखने का सिलसिला ही चल पड़ा। 'नवभारत टाइम्स', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'नंदन', 'पराग', 'बालभारती', 'नन्हें तारे', समेत अनेक पत्र–पत्रिकाओं में बच्चों के लिए लिखी गई रचनाएं छपीं।
बाल साहित्य में उनके नाम को एक व्यापक पहचान मिलने लगी।सुप्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक और बच्चों के प्रिय लेखक प्रकाश मनु ने बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं हैं, जिनमें प्रमुख हैं–प्रकाश मनु की चुनिंदा बाल कहानियाँ, मेरे मन की बाल कहानियाँ, मेरी संपूर्ण बाल कहानियाँ (तीन खंड), मैं जीत गया पापा, मेले में ठिनठिनलाल, भुलक्कड़ पापा, लो चला पेड़ आकाश में, चिन–चिन चूं, मातुंगा जंगल की अचरज भरी कहानियाँ, मेरी प्रिय बाल कहानियाँ, इक्यावन बाल कहानियाँ, नंदू भैया की पतंगें, कहो कहानी पापा, बच्चों की 51 हास्य कथाएं, चुनमुन की अजब–अनोखी कहानियाँ, गंगा दादी जिंदाबाद, किस्सा एक मोटी परी का, चश्मे वाले मास्टर जी, धरती की सब्जपरी, जंगल की कहानियाँ, तेनालीराम की चतुराई के अनोखे किस्से, (कहानियाँ), गोलू भागा घर से, एक था ठुनठुनिया, चीनू का चिड़ियाघर, नन्हीं गोगो के कारनामे, खुक्कन दादा का बचपन, पुंपू और पुनपुन, नटखट कुप्पू के अजब–अनोखे कारनामे, खजाने वाली चिड़िया, अजब मेला सब्जीपुर का (उपन्यास), प्रकाश मनु की बाल कविताएँ, बच्चों की एक सौ एक कविताएँ, हाथी का जूता, इक्यावन बाल कविताएँ, हिन्दी के नए बालगीत, बच्चों की अनोखी हास्य कविताएँ, मेरी प्रिय बाल कविताएँ, मेरे प्रिय शिशुगीत, 101 शिशुगीत (कविताएँ), इक्कीसवीं सदी के बाल नाटक, बच्चों के अनोखे हास्य नाटक, बच्चों के रंग–रंगीले नाटक, बच्चों को सीख देते अनोखे नाटक, बच्चों के श्रेष्ठ सामाजिक नाटक, बच्चों के श्रेष्ठ हास्य एकांकी (बाल नाटक), विज्ञान फंतासी कथाएँ, अजब–अनोखी विज्ञान कथाएं, सुनो कहानियाँ ज्ञान–विज्ञान की, अद्भुत कहानियाँ ज्ञान–विज्ञान की (बाल विज्ञान साहित्य) आदि शामिल हैं।
प्रकाश मनु ने हिन्दी में बाल साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास 'हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास' लिखा। इसके अलावा उन्होंने 'हिन्दी बाल कविता का इतिहास', 'हिन्दी बाल साहित्य के शिखर व्यक्तित्व' और 'हिन्दी बाल साहित्य : नई चुनौतियाँ और संभावनाएँ' पुस्तकें भी लिखी हैं। संस्मरण, साक्षात्कार, आलोचना और साहित्येतिहास से संबंधित विचारोत्तेजक लेखन भी उन्होंने प्रचूर मात्रा में किया है और कईं महत्त्वपूर्ण संपादित पुस्तकों का संचयन भी किया।

बाल साहित्य
प्रकाश मनु ने शुरू में 'देशराग' की कविताएँ लिखी। उनकी कोशिश थी कि कविताएँ बोझिल न हों और उनमें बच्चे और बचपन की सरलता भी थोड़ी झलकनी चाहिए। कविता पढ़कर बच्चों को आनंद आए, यह बड़ी बात है। उनकी पसंद की एक कविता जो कईं पाठयपुस्तकों में भी शामिल की गई है। कविता की शुरूआती पंक्तियाँ हैं–

''छोटे मुंह से कैसे कह दूं, इस भारत की बात रे,
सोने जैसे दिन है इसके, चांदी जैसी रात रे!''[1]

कुछ अरसे बाद चाँद पर कविता लिखी गई। पर शायद यह थोड़ी अलग–सी कविता थी। इस कविता की खासियत यह है कि चांद यहाँ 'चंदा मामा' नहीं है, बल्कि वह भी और बच्चों की तरह एक नन्हा–मुन्ना सा भोला बच्चा है और इसलिए बच्चों से बड़ी जल्दी उसकी दोस्ती हो जाती है।
'सर्दियों में चाँद' नामक कविता में भी बच्चा चाँद को नन्हें–प्यारे दोस्त की भांति सम्बोधित करते हुए कहता है कि सर्दी के मौसम में तुम्हें इधर–उधर भटकना नहीं चाहिए। तुम्हें मेरे कमरे में आकर आराम करना चाहिए। यहाँ बच्चे की चाँद के प्रति चिन्ता और अत्याधिक प्रेम को दर्शाया गया हैं। कविता की शुरूआती पंक्तियाँ इस प्रकार है–

''जाड़े में तुम कहाँ चले जी
नन्हें, नटखट चाँद ?
रूक जाओ आराम करो अब
नभ के चाँद छबीले,
पड़ जाना बीमार कही मत–
नन्हें पथिक हठीले।''[2]

कुछ इसी के आसपास चिड़िया पर भी कविता लिखी गई, 'धीरे से मुसकाती चिड़िया'। यह ऐसी दोस्त चिड़िया है, जिसमें बच्चे की चिड़िया से दोस्ती का वर्णन किया है, जो कि बहुत ही अटूट है–

''मुझको तो अच्छी लगती है, हरे लॉन पर गाती चिड़िया।
चहक–चहककर जब गाती है, पंख खोलकर उड़ जाती है,
तब लगता है आसमान को धरती पर ले आती चिड़िया!''[3]

इसी तरह **'ए**क मटर का दाना', 'एक बिल्ली सैलानी', 'अपना घर भी है गुड़ियाघर', 'दादा जी और चिंटू', 'हमने भी देखा चिड़ियाघर', 'दही–बड़े', 'हाथी दादा', 'ये झोंपड़ियों के बच्चे' और 'पापा–दीदी बहुत बुरी है' प्रकाश मनु की पसंदीदा कविताएँ हैं। इनके लिए इतने बरस बाद भी उन्हें पढ़ते हुए मन में एक हिलोर सी पैदा होती है।

उपन्यास

1. गोलू भाग घर से, 2005
2. एक था ठुनठुनिया, 2006
3. खुक्कन दादा का बचपन, 2008
4. चीनू का चिड़ियाघर, 2008
5. नन्हीं गोगो के अजीब कारनामे, 2008
6. पुंपू और पुनपुन, 2011
7. नटखट कुप्पू के अजब–अनोखे कारनामे, 2013
8. खजाने वाली चिड़िया, 2015

कहानियाँ

1. कहो कहानी पापा (बाल कहानियाँ), 1990
2. इक्यावन बाल कहानियां, 2002
3. नंदू भैया की पतंगे, 2002
4. चिन–चिन चूं, (बाल कहानियां), 2004
5. भुलक्कड़ पापा, 2005
6. लो चला पेड़ आकाश में, 2005
7. मेले में ठिनठिनलाल, 2006
8. रंग–बिरंगी परीकथाएं, 2009
9. रंग–बिरंगी हास्य कथाएं, 2009
10. अजब–अनोखी हास्य कथाएं, 2009
11. अजब–अनोखी परी कथाएं, 2009
12. अजब–अनोखी विज्ञान कथाएं, 2009
13. मेरी प्रिय बाल कहानियां, 2010
14. बच्चों की 51 हास्य कथाएं, 2010
15. मातुंगा जंगल की अचरज भरी कहानियां, 2010
16. अजब–अनोखी बाल कहानियां, 2010
17. अद्भुत कहानियां ज्ञान–विज्ञान की, 2010
18. अनोखी कहानियां ज्ञान–विज्ञान की, 2010
19. करामातीलाल की तलवार, 2010

1. ईसप ने सुनाई अद्भुत कहानियां, 2011
2. तेनालीराम की अजब–अनोखी कहानियां, 2011
3. तेनालीराम के रोचक किस्से, 2011
4. विज्ञान की आश्चर्यों से भरी कहानियां, 2011
5. परियों की 51 मनमोहक कहानियां, 2011
6. जब चांदनी चौंक से आई परी, 2011
7. चुनमुन की अजब–अनोखी कहानियां, 2011
8. पर्यावरण की पुकार, 2012
9. तीस अनूठी हास्य कथाएं, 2012
10. जंगल की कहानियां, 2012
11. निक्का पहुंचा चांद पर, 2013
12. निक्का और नानी के मजेदार किस्से, 2013
13. गंगा दादी जिंदाबाद, 2013
14. छत्तीसगढ़ की सर्वश्रेष्ठ लोककथाएं (डॉ. सुनीला के साथ), 2013
15. किस्सा मोटी परी का, 2014
16. प्रकाश मनु की चुनिंदा बाल कहानियां, 2014
17. विज्ञान की अनोखी कहानियां, 2015
18. विज्ञान फंतासी कथाएं, 2015
19. धरती की सब्जपरी, 2015

बाल ज्ञान–विज्ञान साहित्य

1. अद्भुत कहानियां ज्ञान–विज्ञान की, 2010
2. अनोखी कहानियां ज्ञान–विज्ञान की, 2010
3. विज्ञान की आश्चर्यों से भरी कहानियां (दो खण्ड), 2011
4. महान् भारतीय वैज्ञानिक, 2011
5. भारत के विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक, 2011
6. छत्तीसगढ़– लोक संस्कृति, कला और साहित्य, 2013

बालकाव्य–संग्रह

1. हिन्दी के नए बालगीत (रमेश तैलंग और देवेन्द्र कुमार के साथ) 1994, मानक पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. इक्यावन बाल कविताएँ, 2003, सावित्री प्रकाश, दिल्ली।
3. हाथी का जूता (बाल कविताएँ), 2005, सरला प्रकाशन, दिल्ली।
4. बच्चों की एक सौ एक कविताएँ, 2006, चेतना प्रकाशन, दिल्ली।
5. बच्चों की अनोखी हास्य कविताएँ, 2011, ग्लोबल विजन पब्लिकशर्स, नई दिल्ली।
6. मेरी प्रिय बाल कविताएँ, 2012, विद्यार्थी प्रकाशन, दिल्ली।
7. मेरे प्रिय शिशुगीत, 2015, हिमाचल बुक सेंटर, दिल्ली।
8. बच्चों की 101 गीत–पहेलियाँ, 2016, साहितिका इंडियन पब्लिकेशंस, दिल्ली।
9. प्रकाश मनु की बाल कविताएँ, 2017, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली।

समकालीन हिन्दी साहित्यकार

सन् 1980 से आगे का युग हिन्दी बाल–काव्य–परम्परा के विकास का युग है। सबसे अधिक बालगीत एवं बाल कविताएँ इस युग में लिखे गये। युवा लेखकों की एक बड़ी तादात इस युग में उभर कर सामने आई, जिसने बाल–काव्य–चिंतन–परम्परा का पूर्णतः विकास किया। बाल–काव्य के स्वरूप में विभिन्नता भी इस युग में देखने को मिली, जिनसे बाल–काव्य–परम्परा का विकास हुआ। इस युग में बाल–मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए काव्य का सृजन किया गया। बालकों के मन के विचार तत्त्व पहली बार सक्रिय रूप से सामने आए। बच्चों के भारी बस्तों, सामाजिक आदर्शों से जुड़े उनके मन के भाव, पढ़ाई के बोझ को लेकर उनकी मनःस्थिति बालक के मन की घुटन, उसके मन में चल रहे विभिन्न प्रश्नों आदि पर समान रूप से लेखनी इस युग में चलाई गई।

इस दौर के कवियों और लेखकों में श्री प्रसाद, अनिल कुमार, हरिकृष्ण देवसरे, राष्ट्र बंधु, चन्द्रपाल सिंह यादव, मयंक, रामवचन सिंह, आनन्द, विनोद चन्द्र पाण्डेय विनोद, जयप्रकाश भारती योगेन्द्र कुमार, विष्णु प्रभाकर, शकुन्तला सिरोठिया, विनोद चन्द्र पाण्डेय, रमेश कौशिक, देवेन्द्र कुमार, सूर्य कुमार पाण्डेय, हरीश निगम, दिविक रमेश, कृष्ण शलभ, प्रकाश मनु, रामानुज त्रिपाठी, सुरेश विमल, श्याम सुशील भगवती प्रसाद गौतम, उषा यादव, यश मालवीय, मो. फहीम, साजिद खान, मो. अरशद, शादाब आलम, प्रदीप शुक्ल, सोहन लाल, द्विवेदी, रामेश्वर दयाल दूबे, रमेश तैलंग इत्यादि के नाम लिए जा सकते हैं।

इस युग के बेजोड़ कवि रमेश दिविक की 'घर' कविता बाल–मनोविज्ञान पर आधारित कविताओं में से एक है। जिसमें एक बालक अपने पिता से सवाल करता है जिससे कुछ और सवाल निकलकर आते हैं तथा अंत तक आते–आते पूरी कविता एक थरथराहट में बदल जाती है। कुल सोलह पंक्तियों की यह कविता गुड्डे–गुड़ियों वाली कल्पना से परे, एक घर को एक भिन्न स्वरूप प्रदान करती दिखाई देती है।

सूर्य कुमार पांडेय बाल–काव्य–परम्परा को एक नए ढंग से आगे बढ़ाते हुए ले गए। वे कुछ नया लाने के पक्ष में थे और उसी में सृजनात्मकता को तलाशते थे। बालकों की मीठी सी शरारतों के माध्यम से उन्होंने ऐसी कविताओं का सृजन किया, जो बालकों एवं बड़ों की जबान पर चढ़ जाती है। पांडेय जी जैसे 'एक पान का पत्ता' कविता में लिखते हैं–

''एक पान का पत्ता
जा पहुँचा कलकत्ता।
पकड़े अपना मत्था,
मिला वहाँ पर कत्था।
आगे मिली सुपारी,
सबने की तैयारी।
पहुँचे फिर सब पूजा,
लगा वहाँ पर चूना।''[4]

'पराग' पत्रिका में खासी धूम मचाने वाले बाल साहित्यकार रमेश तैलंग भी इस युग के श्रेष्ठ कवियों में से एक है, जिन्होंने उत्साह और जोश से भरी बाल कविताओं का सृजन किया।'सुबह का गीत' ऐसा ही एक नटखट से भरा हुआ चित्रण प्रस्तुत करता हैः–

''अले, छुबह हो गई,
आँगन, बुहाल लूँ,
मम्मी के कमले की तीदें धमाल लूँ।
कपले ये धूल भले,
मैले है यहाँ पले।''[5]

इसी दौर के अन्य महत्त्वपूर्ण कवि रमेश कौशिक। इन्होंने भी लीक से हटकर बालकों के लिए लिखा। इनकी बात कहने का ढंग कुछ आकर्षक नहीं है, बल्कि कहीं–कहीं तो वह बहुत सपाट, ऊबाउ अभिव्यक्ति का सहारा लेते हैं।'कठपुतली' इसी भाव को लेकर लिखी गई कविता है, जिसमें लय खींचती हुई लगती है। इसी तरह 'शून्य', 'कैमरा', 'ग्रामोफोन रिकॉर्ड' जैसे विषयों पर लिखी गई कविताएँ भी कुछ अलग–सी प्रतीत होती हैं। इन्होंने धरती, सृष्टि जैसे विषयों पर बालकों के लिए कुछ नया लिखने का प्रयास किया।

इनके अतिरिक्त लगभग तीन दशकों तक बाल पत्रिका 'नंदन' के सम्पादकीय–विभाग से जुड़े रहे देवेन्द्र कुमार की बाल कविताओं में कहीं अधिक सूक्ष्मता देखने को मिलती है। आई। प्रकाश मनु की चुनिंदा बाल कविताओं का संग्रह 'इक्यावन बाल कविताएँ' में 'पापा, तंग करता है, भैया', 'दही–बडे', 'चलो शिमला', 'चलो ऊटी', 'क्रिकेट', 'आज सवेरे', 'कितनी देर हुई है', 'ओह, चला गया पानी', 'चिड़िया रानी', 'अपना घर भी है गुड़ियाघर' जैसी उनकी अलग–अलग रंग, अंदाज की कविताएँ शामिल हैं।

योगेन्द्र दत्त शर्मा के 'चटर–पटर' जैसे शिशुगीत भी मजेदार हैं, जो बालकों के साथ खेल–खेल में अपना ही सुर छेड़ देते हैं। इसी युग के अश्वनी कुमार पाठक ने बड़े सुन्दर एवं नाटकीय ढंग से बाल–काव्य–चिंतन–परम्परा को आगे बढ़ाया। उनकी बाल कविताओं के संग्रह हैं– 'तुम धरती के राजदुलारे' (2008), 'चाँद सितारे छू लेने दो' (2011), 'बढ़े चलो' (2015) आदि। इनके 'शेर की चेतावनी' जैसी कविताएँ भुलाए नहीं भूलती।

भैरूलाल गर्ग अपनी बाल कहानियों के लिए अधिक जाने जाते हैं, परन्तु इन्होंने बहुत–सी बाल कविताएँ भी लिखी हैं। गर्ग जी की बाल कविताओं के संग्रह हैं–'गीत सुहाने बचपन के' (2009), 'जहाँ चाह वहीं राह' (2010)। राम निवास 'मानव' की बाल कविताओं के संग्रह में 'मिल कर साथ चले' (2012) प्रमुख हैं।श्यामलाकांत वर्मा, शलैन्द्र पांडेय, शिव मृदुल, हूंदराज, बलवाणी, कमलेशभट्ट कमल, अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन', अनंतप्रसाद रामभरोसे, पीयूष वर्मा, हरिचन्द्र, रमेश राज, कृष्णवल्लभ पौराणिक, योगेन्द्र सिंह भाटी 'योगी', शेषपाल सिंह 'शेष' इत्यादि वर्तमान युग के बाल साहित्यकारों की श्रेणी में आते हैं। श्यामला कांत वर्मा की क्रिकेट के रोमांच को लेकर लिखी गई कविता 'ले लो बल्ला' भी बच्चों ने खूब पसंद की है। इस युग में अनगणित बाल कवि हुए, जिन्होंने अपने बाल–काव्य–ग्रन्थों से बाल–काव्य–चिंतन–परम्परा को विकसित किया। कुछ समर्थ कवियों में यश मालवीय, वसु मालवीय, शिवदेव मन्हास, दिनेश दधीचि, सुशील सिद्धार्थ, संजीव ठाकुर, सूर्यनाथ सिंह, ओमप्रकाश चतुर्वेदी, डोमन साहु समीर, विपुल कुमार, शिव चरण चौहान, संतोष कुमार सिंह, अरविन्द बख्शी, बलराम गुमाशता आदि के नाम भी सामने आते हैं। वर्तमान युग में बाल कवियों के साथ–साथ बाल कवियत्रियों की भी एक लम्बी कतार देखने को मिलती है, जिन्होंने अपने साहित्य सृजन द्वारा बाल काव्य परम्परा को विकसित किया।

इस प्रकार से देखा जाता है कि वर्तमान युग में नन्हें मुन्ने बच्चों के लिए सुंदर, सुचित्रित बाल–काव्य–परम्परा विकसित है। जिनमें निष्कर्ष की बात करें तो अंजु सदल की 'सपला के साथी' (2003), और 'टिंकु चला नानी के घर' (2003), मंजु कपूर की 'नानी की खिचड़ी' (2004), तनु मलकोटिया की 'चुनमुन और गोपा' (2004), रमेश तैलंग की 'निक्का पैसा' (2006), कुट–कुट गिलहरी (2006), 'सोन मछरिया' (2006) इत्यादि मुख्य रूप से बाल–मनोविज्ञान पर आधारित बाल–काव्य–संग्रह हैं। प्रकाश मनु द्वारा सम्पादित बच्चों के प्रिय कवि श्रेणी में कन्हैयालाल, योगेन्द्रदत्त शर्मा, रमेश तैलंग, प्रकाश मनु, शेरजंग गर्ग, देवेन्द्र कुमार, सूर्यप्रकाश पांडेय की कुछ चुनिंदा बाल कविताओं के संग्रह प्रकाशित हुए, जिनमें 'जमा रंग का मेला' (2005), 'कन्हैयालाल मत्त', 'कैसा आया मजा' (2005) आदि प्रमुख हैं।

निष्कर्ष

प्रकाश मनु तथा अन्य समकालीन बाल साहित्यकारों ने बाल साहित्य लेखन में अपनी अमित छाप छोड़ी है। बाल मन की भावनाओं को लेखनी से उकेरना तथा बच्चों की वास्तविक मनोस्थिति का वर्णन बाल साहित्य में देखने को मिलता है।बालकों का मन कोमल होता है और उनकी इस कोमलता का आंकलन, मनोविज्ञान के आधार पर किया जा सकता है। इस दिशा में आधुनिक युग में बाल–काव्य के विकास को देखते हुए कुछ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे बाल–मनोवैज्ञानिक–अध्ययन के माध्यम से बालकों के विकास को एक निश्चित दिशा प्रदान की जा सकती है।

संदर्भ

1. मनु, प्रकाश, मेरे कुछ आत्म–संस्मरण यादों की पगडंडिया और धूसर उजाले, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली, 2019, पृ. 214
2. उपरिवत, बच्चों की अनोखी हास्य कविताएँ, ग्लोबल विजन पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2011 पृ. 69
3. उपरिवत, मेरी प्रिय बाल कविताएँ, विद्यार्थी प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ. 51
4. उपरिवत, हिन्दी बाल कविता का इतिहास, मेधा बुक्स, दिल्ली, 2003, पृ. 111
5. तैलंग, रमेश, कुमार, देवेन्द्र, मनु, प्रकाश, हिंदी के नये बालगीत, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली, 2017, पृ. 23